P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-6* September- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी तथा गैर आदिवासी विधार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

रेखा सालवी
शोध छात्रा,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

जागृति पारीख
रीडर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान महिला टीचर्स ट्रेनिंग महाविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन किया गया हैं। इस हेतु शोधार्थी ने उदयपुर जिले के 320 आदिवासी व 320 गैर आदिवासी कुल 640 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस शोध प्रदत्तों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण जो कि श्रीमती कमला द्विवेदी द्वारा निर्मित परीक्षण है, जिसे प्रयोग किया। सांख्यिकी विश्लेषण हेतु जेड–परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में काफी अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द : उच्च शैक्षिक उपलब्धि, निम्न शैक्षिक उपलब्धि, आदिवासी, गैर आदिवासी और जीवन मूल्य।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से ही शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास करना रहा है। इन क्षमताओं का प्रकटीकरण व विकास तथी संभव है, जबकि उनके विकास के लिए उचित अवसर प्रदान किए जाए। अतः विद्यालय के पुस्तकीय ज्ञान से आगे परम् कर्त्तव्य है, कि उदार, विशाल बहुअंगी दृष्टि रखते हुए पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास को अपना परम लक्ष्य मानकर इसके लिए अवसरों की उत्तम व्यवस्था करें। इन्हें अपने पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग रूप माने। ऐसे ही विद्यालय को आज, श्रेष्ठ, प्रगतिशील, युगानुकूल, उपयोगी विद्यालय कहा गया है।

भारतवर्ष संस्कृति एवं मूल्य प्रधान देश है इसलिए भारत ने अपनी एक विशिष्ठ पहचान विश्व में बना रखी है। सामाजिक एवं नैतिक ऐसे मूल्य है जिसके अभाव में हमारा सम्पूर्ण जीवन ही पशुतुल्य है। आज विद्यार्थियों में इन मूल्यों के विकास हेतु कई प्रयास किये जा रहे है। आज शैक्षिक जगत में जहाँ शिक्षा के स्तर की बात होती है वहीं दिनों–दिन छात्रों के गिरते सामाजिक व नैतिक स्तर पर भी शिक्षाविदों द्वारा चिन्ता व्यक्त की जा रही है। मानव व्यवहार मूल्यों की अभिव्यक्ति है, समाज का प्रत्येक सदस्य अपने जीवन में भिन्न–भिन्न मूल्यों को धारण किये हुआ है। मूल्य मानव जीवन के अविरल स्त्रोत है जिनके निश्चल प्रवाह के सींचन से जीवन पल्लवित, विकसित एवं पुष्पित होता है। मूल्य ही वे प्रेरक तत्व है जिन्हें व्यक्ति की प्रगति का मार्ग निर्देशक माना जाता है। मूल्यों की उत्पत्ति समूह से होती है तथा प्रत्येक मूल्य के माध्यम से समाज की रूचियों की अभिव्यक्ति होती है। समूह द्वारा प्रदान किये गये प्रतिमानों, आदर्शों या वस्तुओं की प्राथमिकता ही सामाजिक मूल्य का रूप ले लेते है। कुछ व्यक्तिगत मूल्य भी होते है जिनका जन्म एवं विकास अनुभव के विकास के साथ ही होता है क्योंकि अनुभव के आधार पर ही व्यक्ति कुछ सिद्धान्तों का निर्माण करता है। जो धीरे–धीरे जीवन दर्शन का रूप ले लेते है तथा इन्हें ही मूल्यों की संज्ञा दी जाती है।ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार जनजाति शब्द से सर्वाधिक मेल खाता हुआ ''जन'' है, जिसका तात्पर्य विशिष्ट व्यक्तियों के समाज से रहा है। इन्हीं समूहों को आज हम ''जनजाति'' अथवा आदिवासी के नाम से जानते एवं पुकारते हैं। कालांतर में ये समुदाय जिन क्षेत्रों (जन) में रहते थे, उन क्षेत्रों को अपने नाम के साथ जोड़ दिया जाता था। ऐसे समस्त क्षेत्र पृथक–पृथक रूप से ''जनपद'' कहलाते थे। स्पष्ट है कि आज हम जिन समुदायों को जनजाति के नाम से जानते हैं वे सभी सदियों से हमारे देश के मूल निवासी रहे हैं। आर्यों के आगमन के पूर्व से ही वे सम्पूर्ण देश के विभिन्न देशों में रहते आये है।

मार्टिन एवं रिजले ने इन्हें ''आदिवासी'' हटन ने इन्हें ''आदिम जातियाँ'' सर वेन्स ने इन्हें ''पर्वतीय आदिम जातियाँ'' या ''वन्य जातियाँ'' घुरये ने इन्हें ''पिछडे हुए हिन्दू'' जैसे शब्दों से पुकारा है। वनों में रहने के कारण ही गाँधीजी ने इन्हें ''गिरिजन'' के नाम से पुकारा, समाजवादी घुरये ने ही इन्हें अनुसूचित जनजातियाँ शब्द से सम्बन्धित किये जाने का प्रस्ताव रखा था, जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के अन्तर्गत स्वीकार किया गया। उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों से तात्पर्य उन छात्र–छात्राओं से जो पिछली कक्षा में 60 प्रतिशत या इससे अधिक अंक से उत्तीर्ण हुए हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में कक्षा XI में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों से तात्पर्य उन छात्र–छात्राओं से जो पिछली कक्षा में 48 प्रतिशत अंक या इससे कम अंकों से उत्तीर्ण हुए हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में कक्षा XI में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्य की तुलना करना ।
2. उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों की तुलना करना ।

शोध की परिकल्पनाः

1. समग्र आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
2. समग्र उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा विदेशों में हुए शोध पर भारत में हुए शोध कार्यो का अध्ययन किया गया जेसे

जकारिया, याकूबू (2002) ने ''सांस्कृतिक मूल्यों का व्यावसायीकरण पर अध्ययन'' किया तथा उनके निष्कर्ष के अनुसार – वे व्यक्ति जो अपनी संस्कृति को पूर्ण रूप से मानते हैं वे सांस्कृतिक मूल्यों का अपने व्यवसाय में पूर्ण रूप से पालन करते है। सांस्कृतिक मूल्य उनके व्यक्तित्व को भी प्रभावित करते हैं तथा इनका प्रभाव उनके व्यवसाय पर पड़े बिना नहीं रहता। सांस्कृतिक मूल्य समाज के व्यवस्थीकरण में भी सकारात्मक योगदान प्रदान करते है।

रोनाल्ड, बी. स्मिथ (2003) ने ''विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शैक्षिक मूल्य, जो कि विद्यार्थियों में संस्कृति का प्रत्यारोपण करते है का अध्ययन'' किया तथा पाया कि उन शिक्षण मूल्यों को कक्षा–कक्ष में पढ़ाया जाना चाहिये जो संस्कृति के हस्तांतरण हेतु आवश्यक है।

लिंगर्न, एन. मेक्सिन (2004) ने ''परिवार के प्रकृति व माता–पिता कीसहभागिता का समायोजन व जीवन मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन'' किया एवं निष्कर्ष में पाया कि–(1) संयुक्त परिवार की बालिकाओं का समायोजन व जीवन मूल्य एकांकी परिवार की बालिकाओं से श्रेष्ठ होता है। (2) माता–पिता द्वारा दण्ड कठोर अनुशासन,शैक्षिक स्तर शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता आदि का बालिकाओं के समायोजन पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

रोसारियो, सिबेलो (2004) ने ''आसपास के वातावरण का किशोरों के शैक्षिक मूल्यों व विद्यालयी प्रयासों पर प्रभाव'' जानने के लिए अन्वेषण किया। उन्होनें इस हेतु 262 गरीबी अफ्रीकी एकल माताओं व उनके 7वीं व 8वीं कक्षाओं के किशोरों पर गहन अध्ययन किया तथा परिणामस्वरुप पाया कि– एकल माताओं पर आसपास के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। 7वीं एवं 8वीं कक्षाओं में पढ़ने वाले किशोरों पर आसपास के वातावरण का प्रभाव अधिक पाया गया। किशोरों के शैक्षिक मूल्यों पर भी आसपास का वातावरण प्रभाव डालता है। विद्यालयी प्रयासों को भी आसपास का वातावरण प्रभावित करता है।

जोशी, कल्पना (2002)– ''उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति व जीवन मूल्यों का अध्ययन'', पीएच.डी.। प्रस्तुत शोधकाप्रमुख उद्देश्य संगीत व गैर–संगीत विद्यार्थियों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना व जीवन मूल्यों का प्रतिशत के आधार पर वरीयता क्रम ज्ञात करना है।प्रस्तुत शोध में निष्कर्ष प्राप्त हुए कि संगीत व गैर–संगीत दोनों में ही विद्यार्थियों ने सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानात्मक मूल्यों को वरीयता प्रदान की व आर्थिक शक्ति तथा सैद्धांतिक व पारिवारिक मूल्यों को वरीयता क्रम मेंनिम्न स्थान प्रदान किया।

सिंह, लीना (2005)– ''आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्य, वैज्ञानिक प्रकृति तथा व्यावसायिक अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन'', पीएच.डी. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर। मुख्य निष्कर्षों में सामने आया कि आदिवासी व गैर आदिवासी दोनों की वैज्ञानिक प्रकृति में तुलना से यह पाया गया कि गैर आदिवासी विद्यार्थियों में अधिक वैज्ञानिक प्रकृति है। वहीं आदिवासी विद्यार्थियों में उच्च व्यावसायिक अभिरुचि पाई गई जबकि दोनों के जीवन मूल्यों में समानता पाई गई।

शर्मा चन्द्रकान्ता (2015)– ''गुणात्मक एवं मूल्य शिक्षा में सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व का अध्ययन'' मुख्य निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मूल्य शिक्षा का कॉफी महत्त्व हैं।

वैष्णव श्वेता (2018)– ''आदिवासी एवं गैर आदिवासी किशोर विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों, समायोजन एवं पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन,'' पीएच.डी. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर। मुख्य निष्कर्ष में पाया गया कि आदिवासी व गैर आदिवासी किशोर विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों में समानता है परन्तु इनके समायोजन में काफी अन्तर हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा उदयपुर जिले के कुल 640 विद्यार्थियों जो 320 आदिवासी व 320 गैर आदिवासी विद्यार्थियों का चयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया है जो कि श्रीमती कमला द्विवेदी (मनोविज्ञान विभाग, डी.जी.कॉलेज,कानपुर) के द्वारा निर्मित परीक्षण हैं। इस उपकरण को उच्च शैक्षिक विद्यार्थियों के द्वारा भरा जा सकता हैं। इस उपकरण में सात मूल्यों को सम्मिलित किया गया हैं जो कि, 1. सैद्वान्तिक मूल्य 2. राजनीतिक मूल्य 3. आर्थिक मूल्य 4. सामाजिक मूल्य 5. सौन्दर्यात्मक मूल्य 6. धार्मिक मूल्य 7. नैतिक मूल्य को शामिल किया गया हैं। इन सात मूल्यों को आठ समूहों में विभक्त किया गया हैं। अर्थात एक समूह में सात मूल्यों से सम्बन्धित प्रश्न रखे गये हैं।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे दत्त विश्लेषण हेतु निम्नांकित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा–

मध्यमान

$$\overline{X} = \frac{\Sigma x}{N}$$

जहाँ –

Σx = समस्त समंकों का योग

N = विद्यार्थियों की संख्या

मानक विचलन

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N}}$$

जहाँ –

S.D.= मानक विचलन

x = प्राप्तांकों से अंक समूह के मध्यमान विचलन (X – M = x)

Σx^2 = प्रत्येक प्राप्तांकों के अपने अंक वितरण के मध्यमान के विचलन का वर्ग तथा फिर प्रत्येक विचलन के वर्ग का कुल योग

N = संख्याओं का योग (कुल आवृत्ति)

जेड–परीक्षण

$$|Z| = \frac{P1 - P2}{\sqrt{P0q0\left(\frac{1}{n1} + \frac{1}{n2}\right)}}$$

यहाँ P1= गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में औसत स्तर

P2= आदिवासी विद्यार्थियों में औसत स्तर

n1= चयनित गैर–आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या

n2= चयनित आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या

$$P0 = \frac{n1 \text{ X } P1 + n2 \text{ X } P2}{n1 + n2}$$

q0= 1-P0

सह–सम्बन्ध

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x2 \times \Sigma y2}}$$

जहाँ –

Σx = प्रथम समूह

Σy = द्वितीय समूह

Σx^2 = प्रथम समूह के वर्गों का योग

Σy^2 = द्वितीय समूह के वर्गों का योग

प्रतिषत

विकसित वैज्ञानिक द्वष्टिकोण की वृद्वि के मापन हेतु प्रतिशत का उपयोग किया जाता हैं। तुलनात्मक स्थिति दर्शाने में प्रतिश्त को उपयुक्त माना जाता हैं।

$$\% = \frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{पूर्णांक}} \text{ X100}$$

विष्लेषण एवं व्याख्या

आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य

आदिवासी विद्यार्थियों की चार श्रेणियों जिनमें क्रमशः 80–80 विद्यार्थी है के जीवन मूल्यों का मापन किया गया। इसके पश्चात सभी 80 द्वारा विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का सकल योग निकालकर अन्य श्रेणी के विद्यार्थियों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा अर्जित किये जा सकने योग्य अधिकतम अंक 7 तथा प्रत्येक श्रेणी के विद्यार्थियों द्वारा अर्जित किये जा सकने योग्य अधिकतम अंक 560 थे। संकलित समंको का विश्लेषण निम्नानुसार है –

तालिका 4.1

आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य		
श्रेणी	अंक	प्रतिशत
उच्च शैक्षिक आदिवासी छात्र	463	82.68%
उच्च शैक्षिक आदिवासी छात्रा	471	84%
निम्न शैक्षिक आदिवासी छात्र	258	46.07%
निम्न शैक्षिक आदिवासी छात्रा	278	49.64%
औसत		65.63%

उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त आदिवासी छात्र एवं छात्राएं दोनों ही निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त आदिवासी छात्र एवं छात्राओं से अधिक जीवन मूल्य रखते है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि से आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्य बढ़ते है। आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य औसतन 65.63 प्रतिशत है।

4.2 गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य :

तालिका 4.2

गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य		
श्रेणी	अंक	प्रतिशत
उच्च शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्र	469	83.75%
उच्च शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्रा	478	85.36%
निम्न शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्र	270	48.21%
निम्न शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्रा	290	51.79%
औसत		67.28%

उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त गैर–आदिवासी छात्र एवं छात्राएं दोनों ही निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त गैर–आदिवासी छात्र एवं छात्राओं से अधिक जीवन मूल्य रखते है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि से गैर–आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्य बढ़ते है। गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य औसतन 67.28 प्रतिशत है।

आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य की तुलना

आदिवासी विद्यार्थियों में जहाँ जीवन मूल्य औसतन 65.63 प्रतिशत है वही गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य औसतन 67.28 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि

आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य अपेक्षाकृत कुछ कम है।

चार्ट

आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य

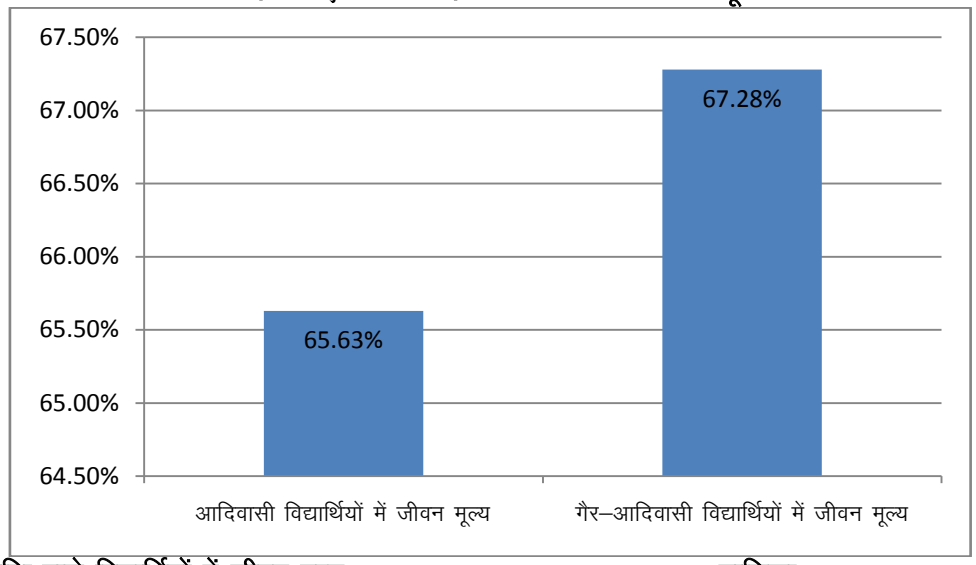

उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में जीवन मूल्य

तलिका 4.1 और 4.2 की सहायता से उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में जीवन मूल्य का पृथक आकलन कर तालिका 4.3 बनाई गई।

तालिका 4.3 के अनुसार उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले गैर–आदिवासी छात्र, उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी छात्रों से 1.07 प्रतिशत अधिक जीवन मूल्य रखते है। वही उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली आदिवासी छात्राएं, उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली गैर–आदिवासी छात्राओं से 0.25 प्रतिशत अधिक जीवन मूल्य रखती है।

तालिका 4.3

उच्च शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य		
श्रेणी	अंक	प्रतिशत
उच्च शैक्षिक आदिवासी छात्र	463	82.68%
उच्च शैक्षिक आदिवासी छात्रा	471	84%
उच्च शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्र	469	83.75%
उच्च शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्रा	478	85.36%
औसत		83.98%

निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में जीवन मूल्य

तलिका 4.1 और 4.2 की सहायता से निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों का पृथक आकलन कर तालिका 4.4 बनाई गई।

तालिका 4.4

निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य		
श्रेणी	अंक	प्रतिशत
निम्न शैक्षिक आदिवासी छात्र	258	46.07%
निम्न शैक्षिक आदिवासी छात्रा	278	49.64%
निम्न शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्र	270	48.21%
निम्न शैक्षिक गैर–आदिवासी छात्रा	290	51.79%
औसत		**48.93%**

तालिका 4.4 के अनुसार निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले गैर–आदिवासी छात्र, निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी छात्रों से 2.14 प्रतिशत अधिक जीवन मूल्य रखते है। इसी प्रकार निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली गैर–आदिवासी छात्राएं, निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली आदिवासी छात्राओं से 2.15 प्रतिशत अधिक जीवन मूल्य रखती है।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में जीवन मूल्य की तुलना

उच्च शैक्षिक विद्यार्थियों में जहाँ जीवन मूल्य औसतन 83.98 प्रतिशत है वही निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में तार्किक अवलोकन व स्पष्टीकरण औसतन 48.93 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य अपेक्षाकृत काफी कम है। शिक्षा व्यक्तियों व परिस्थितियों को बेहतर ढ़ग से सोचने व विश्लेषण करने में मदद करती है। शिक्षा से विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों की समझ एवं क्षमता में वृद्धि होती है। आदिवासी व गैर आदिवासी दोनों ही श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए जीवन मूल्यों में वृद्धि हेतु शिक्षा लाभकारी है फिर चाहे वह छात्र हो या छात्रा।

चार्ट 4.2 उच्च शैक्षिक एवं निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य

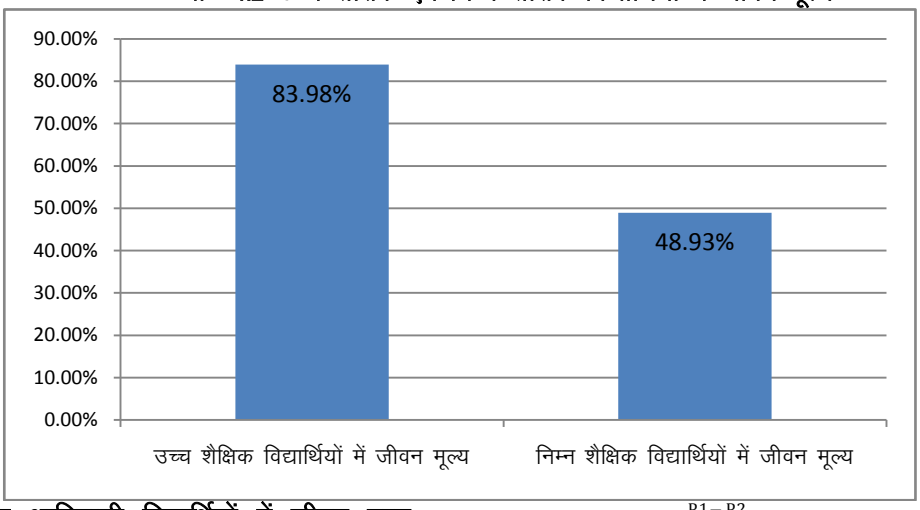

आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य अतंर की सार्थकता

गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर, आदिवासी विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर से अधिक है। यह अंतर महत्वहीन है अथवा सार्थक यह पता लगाने हेतु सार्थकता की जाँच जेड परिक्षण द्वारा की गई।

$$|Z| = \frac{P1-P2}{\sqrt{P0q0(\frac{1}{n1}+\frac{1}{n2})}}$$

यहाँ P1= गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर

P2= आदिवासी विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर

n1= चयनित गैर–आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या

n2= चयनित आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या

$P0= \frac{n1\ X\ P1+n2\ X\ P2}{n1+n2}$

q0= 1-P0

$|Z| = \frac{0.6728-0.6563}{\sqrt{0.66455\ X0.33545\ (\frac{1}{320}+\frac{1}{320})}}$

$|Z| = \frac{0.0165}{\sqrt{0.2229(\frac{2}{320})}}$

$|Z| = \frac{0.0165}{\sqrt{0.00139}}$

$|Z| = \frac{0.0165}{0.0373}$

|Z| = 0.442

जेड का आकलित मान 0.442 उसके तालिका मान (5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.96) से कम है अतः आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य और गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्य के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। गैर–आदिवासी विद्यार्थियों में यह अपेक्षाकृत बेहतर है जबकि आदिवासी विद्यार्थियों में यह कुछ कम है।

उच्च शैक्षिक एवं निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य अतंर की सार्थकता

उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर, निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर से अधिक है। यह अंतर महत्वहीन है अथवा सार्थक यह पता लगाने हेतु सार्थकता की जाँच जेड परिक्षण द्वारा की गई।

$$|Z| = \frac{P1-P2}{\sqrt{P0q0(\frac{1}{n1}+\frac{1}{n2})}}$$

यहाँ P1= उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर

P2= निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों में औसत जीवन मूल्य स्तर

N1= उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त चयनित विद्यार्थियों की संख्या

N2= निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त चयनित विद्यार्थियों की संख्या

$P0= \frac{n1\ X\ P1+n2\ X\ P2}{n1+n2}$

q0= 1-P0

$|Z| = \frac{0.8398-0.4893}{\sqrt{0.66455\ X0.33545\ (\frac{1}{320}+\frac{1}{320})}}$

$|Z| = \frac{0.3505}{\sqrt{0.2229(\frac{2}{320})}}$

$|Z| = \frac{0.3505}{\sqrt{0.00139}}$

$|Z| = \frac{0.3505}{0.0373}$

|Z| = 9.39

जेड का आकलित मान 9.39 उसके तालिका मान (5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.96) से अधिक है अतः उच्च शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य और निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में जीवन मूल्य के स्तर में सार्थक अन्तर है। उच्च शैक्षिक विद्यार्थियों में यह अपेक्षाकृत बेहतर है जबकि निम्न शैक्षिक विद्यार्थियों में यह काफी कम है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने यह पाया कि आदिवासी व गैर आदिवासी विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों में काफी अन्तर पाया गया अतः निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के स्तर में सुधार के लिए शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हैं। शिक्षा में प्रगति के साथ ही विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों की समझ गहरी होती है और उनमें मूल्यों का विकास होता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Ary. Donal & others - (1972) "Introduction to research in Education", New York, Rinchart &*

Winston, Best, J. W. (1983) "Research in education" Fourth edition, Prentice Hall of India Private Ltd., New Delhi.

2. *Bigge, M.L. and Hunt (1980) "Psychological foundation of education", New York, Harpe Row.*
3. *Borg, W.R. (1983) "Educational research", New York, Longman Green and Co. Ltd.*
4. *Dunkin, M.J. and Biddle, B.J. (1974) "The study of teaching" New York: Holt Rinchart and Winston.*
5. *Fox, Davis J. (1969) "The research process in education", New York, Holt Rinehart and Winston.*
6. *Garrett, H.E. (1973) "Statistics in psychology and education", London Longman's Green & Co.*
7. *Good, Bar and Scates (1959) "Methodology of educational research" Appleton Century, Inc.*
8. *Guilford. J.P. (1966) "Fundamental strategies in psychology and education", New York, McGraw Hill Book Company.*
9. *कपिल, डॉ. एच.के. (2011) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।*
10. *सिंह, डॉ. रामपाल, शर्मा, डॉ. ओ.पी. (2008) ''शैक्षिक अनुसंधान व सांख्यिकी'' श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।*
11. *सुखिया, एस. पी. एवं मेहरोत्राा (1984) ''शैक्षिक अनुसंधन के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक भंडार, आगरा।*
12. *भटनागर, आर.पी. : शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
13. *ढोंढियाल,सच्चिदानन्द एवं फाटक, ए.बी. (1972) ''शैक्षिक अनुसंधन का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*